बौद्ध दर्शन में पर्यावरण

डॉ. अर्चना मिश्रा
एसो. प्रोफेसर, बी.एड्. विभाग
रतन सेन डिग्री कॉलेज, बाँसी
सिद्धार्थनगर (उ0प्र0)

भगवान बुद्ध के जन्म से परिनिर्वाण काल तक उनकी गतिविधियों को देखते हुए भगवान बुद्ध के पर्यावरण की रक्षा का प्रथम पथ प्रदर्शक तथा उपदेशक कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। भगवान बुद्ध के समान प्रकृति प्रेमी, पर्यावरण रक्षक विरले ही हुये हैं। भगवान बुद्ध का जन्म बोधि प्राप्ति, प्रथम उपदेश देने तथा महापरिनिर्वाण की घटना अक्षरशः यह सिद्ध करते हैं कि वे पर्यावरण रक्षण के महान समर्थक, उद्धारक व प्रणेता थे।

बौद्ध धम्म संसार का अकेला और अब तक का एक मात्र धम्म पथ है जो पेड़, पौधों, मानव, पशु पक्षियों और प्रकृति से एकदम निकट का रिश्ता स्थापित करने वाला सिद्धान्त है जिसमें सदृश्य एवं अदृश्य सभी प्रकार के जीव जन्तुओं के कल्याण की व्यवस्था विधमान है। अतः हम कह सकते हैं कि भगवान बुद्ध द्वारा स्थापित यह धम्म कृषि वन वृक्षों एवं पशु पक्षियों को सीधे रुप से अथवा अभिन्न रुप से जुड़ा हुआ है।

सिद्धार्थ कुमार के बाल्यकाल का अध्ययन करते समय हमें खेत जोतने के उत्सव का भी पता चलता है यही कारण है कि भगवान बुद्ध के उपदेशों में कृषि, वन और वृक्ष के उदाहरण भरे पड़े हैं। यदि हम धम्मपदद नामक ग्रन्थ का ही अवलोकन करें, तो यह पायेंगे कि इस ग्रन्थ में सम्मिलित 423 उपदेशों में से लगभग 250 उपदेश पशु-पक्षी, वृक्ष उसके उत्पादन और प्रकृति को आधार बनाकर ही कहे गये हैं।

बौद्धों का एक और महान ग्रन्थ है :- मिलिन्द प्रश्न, इस ग्रन्थ में महाराज मिलिन्द और आचार्य नामसेन के मध्य हुए प्रश्न उत्तरों का ब्योरा उपलब्ध है। इस ग्रन्थ के अंत में एक बहुत ही ज्ञानवर्धक अध्याय दिया गया है जिसे पढ़कर अतीत आश्चर्य होता है कि आज के 500 वर्ष पूर्व बौद्ध विद्वानों ने पशु-पक्षी, वन, वृक्ष और प्रकृति की इतनी सूक्ष्म विवेचना की थी और प्रत्येक के गुणावगुणों की व्याख्या की गयी जिसके सामने आज का अधुना विज्ञान भी परास्त है।

भवगान बुद्ध किसी भी परिस्थिति में जंगलों को उजाड़ने की बात नहीं करते थे। बल्कि समय समय पर वे राजाओं और सामान्य लोगों का नये वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित करते रहते थे उनकी ही प्रेरणा से अनेकों अम्बवन अस्तित्व में आये थे। वे हमेशा भिक्षुओं को कहते थे भिक्खु ध्यान करो अरण्य में जाकर एकांत में वृक्षों के नीचे पालथी मारकर शरीर को सीधा कर बैठ जाओ और आते जाते श्वास पर मन केन्द्रित करके विपश्यना पथ पर बढ़ते चले जाओ।

बौद्ध ग्रन्थ संयुक्त निकाय में भी बुद्ध ने पर्यावरण एवं उसके विविध पक्षियों, नदियों, वृक्षों, पर्वतों की भूमिका पर बहुत बल दिया है।

सम्पूर्ण बौद्ध साहित्य पर्यावरण विषयक धारणाओं से परिपूर्ण दिखाई देता है जिसमें कृषि, नदी, जल प्रबन्धन, वन एवं पशु पक्षियों का उल्लेख सर्वदा प्राप्त होता है। यहां तक कि जातक कथाओं में सर्वदा पशु पक्षियों के मध्यम से तत्युगीन समाज के विविध पक्षों को प्रस्तुत किया गया है। अनेक जातक कथाओं का शीर्षक इन्हीं पशुपक्षियों के नाम

Scanned with OKEN Scanner

पर उल्लिखित है जिसमें पशुयोनि से सम्बन्धित जातक कथाओं में गजजातक, शशक जातक, गणकुम्भ जातक, जर्कट जातक आदि की कथाओं का अंकन भरहुत एवं सांची की स्तूप वास्तुकला में दृष्टिगत है। इन जातक कथाओं के अंकन में तत्कालीन समाज एवं पर्यावरण के अनेक दृश्य भी दृष्टिगत है जैसे ग्रामीण जीवन कृषि लता पुष्प वृक्ष आदि।

भगवान बुद्ध ने पेड़ पौधों को सजीव मानते हुए जीव संयोत उनके संरक्षण की बात कही। प्रकृति से अत्याधिक लगाव के चलते बुद्ध ने स्वयं को प्रकृतिमय कर लिया। इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है कि प्रकृति के सुरम्य वातावरण लुम्बनी वन में इनका जन्म हुआ। बोध गया में निरंजन के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे सम्बोधि को प्राप्त किया। सारनाथ में साल वृक्षों के नीचे प्रथम धर्मोपदेश तथा कुशीनगर के वनाच्छादित प्रदेश में जीवन का त्याग किया। बुद्ध ने जल की शुद्धता पर विशेष बल देते हुए उसके दुरुप्योग को निशिद्ध माना। समुद्र के आठ गुणों को बताकर उन्होंने संसार को यह संदेश दिया कि उनकी समुद्र से कितनी गहरी आत्मीयता थी। विनय पटक के चुल्लवंग में समुद्र के गुण तथा उसके अन्दर रहने वाले जीव जन्तुओं का जिस तरह से वर्णन है उससे बुद्ध की पर्यावरण दृष्टि का अंदाजा लगाया जा सकता है उन्होंने वृक्षों के मध्य उद्यानों, वनों तथा नदियों के किनारे भिक्षु विहार बनाये जाने का नियम ही बना दिया था। भगवान बुद्ध ने पर्यावरण संरक्षण के लिए सामूहिक रुप से समाज के सभी लोगों द्वारा अपने दायित्व निर्वहन का उपदेश दिया। पावा से कुशीनगर जाते हुए स्वयं बुद्ध ने भिक्षुओं के साथ ककुत्था नदी का जल ग्रहण किया था। श्रावस्ती के जेतवन में रहते समय वृक्षों के संरक्षण तथा सम्वर्धन के सम्बन्ध में दिया गया उनका उपदेश महत्वपूर्ण है।

बौद्ध साहित्य में पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न उपायों का वर्णन यह संकेतित करता है कि उस समय पर्यावरण संरक्षण के प्रति सर्वत्र चेतना व्याप्त थी। बौद्धकालीन भारतीय चिन्तन प्रकृति प्रधान रही। चूंकि शताब्दियों तक मानव ने प्रकृति के साथ समन्वय बनाये रखा। बौद्ध काल में मनुष्य प्रकृति का आराध्य रहा। प्रकृति के मनोरम सौन्दर्य का उसने भरपूर आनन्द लिया। उस समय मानव की जीवनचर्या ऐसी रही कि मनुष्य तथा प्रकृति के सम्बन्धों में कभी व्यवधान नहीं आया।

बौद्ध साहित्य में भूमि, जल, वायु, अग्नि, वृक्ष, पशु तथा पक्षियों की पवित्रता एवं पूजन की बात सर्वत्र की गयी है। दूसरे शब्दो में कह सकते है कि विश्व जन समुदाय 21वीं शताब्दी के प्रथम दशक में जिस पर्यावरणीय संतुलन के प्रति चिंतित है उसकी परिकल्पना तथा उससे मुक्ति की व्यवस्था का प्रविधान बौद्ध साहित्य में स्पष्ट रूप से वर्णित है।

बौद्ध काल में वनों के साथ साथ पर्वतों की भी पवित्रता पर बल दिया गया है। वस्तुतः बुद्ध का चिन्तन मानव केन्द्रित है। विवेकशील, शीलपरिशुद्ध एवं लोकोपकार के भाव से प्रेरित करुणार्ध मानव जिस समाज में विद्यमान हो वह निश्चय ही उच्चतम आदर्शो की ओर उन्मुख एक स्वस्थ्य एवं प्रगतिशील समाज होगा।

आज के वैज्ञानिक युग में पर्यावरण मुख्यतः पांच प्रकार से प्रदूषित हो रहा है जल, थल वायु ध्वनि ताप प्रदूषण। बौद्ध चिन्तन में धर्म एवं आध्यात्म का विशिष्ट स्थान रहा है तथा स्वयं महात्मा बुद्ध ने धर्म के आलोक में ऐसी व्यवस्था प्रस्तुत की थी कि आज के वैज्ञानिक युग में इस तरह के प्रदूषणों से पर्यावरण को पूर्णतया सुरक्षित रखते हुए मानव अपना सर्वांगीण विकास करने में समर्थ था।

बौद्ध के समय में वैदिक काल से चली आ रही परम्परा प्रचलित थी प्रकृति की विभिन्न शक्तियों में देवत्व का आरोपण का उनकी पूजा किये जाने का विधान जैन साहित्य और जातक ग्रन्थों में भी मिलता है उसका विवरण निम्नवत

Scanned with OKEN Scanner

है :- इन्द्र, ब्रहमा, यक्ष, नागपूजा, अग्निपूजा, सूर्यपूजा, जल पूजा, वृक्षपूजा, धार्मिक क्रियाएं एवं विश्वास।

बौद्ध साहित्य में पर्यावरण सम्बन्धी संदर्भ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। प्रकृति प्राणवान एवं उर्जावान है। यह हमारी शक्ति का सोत है। प्रत्येक जीव के लिए इसकी उपयोगिता है। प्रकृति के प्रति बौद्ध धर्म की दृष्टि सदैव मैत्री भाव से युक्त रही है।

भगवान बुद्ध ने आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले यह कहा था कि पेड़ो में जीवन है। वे मूर्ख लोग है जो पेड़ों को काट्ते हैं। लोग नये ताड़ वृक्षों को काटकर उसके पत्तों से पादुकायें बनाते थे उसे बुद्ध ने रोका और उसे दूषित कृत्य बतलाया क्योंकि पेड़ काटने से जीवन हिंसा होती है। यह ठीक कहा गया है कि- "मानव को पर्यावरण से पृथक रूँप से नही समझा जा सकता। अतः घर, परिवार, समाज, राष्ट्र, सारी पृथ्वी सभी एक वृहद पर्यावरण के ही रूप हैं। प्रकृति इन सभी मानवीय घटकों में सर्वोपरि है।

बुद्ध ने प्रारम्भ से ही वातावरण की पवित्रता सहिष्णुता, सहभागिता को समझा और तदनुसार मानवोपयोगी संदेश दिए ताकि मानव समाज "जियो और जीने दो" के सिद्धान्त को अपनाकर शास्वत रुप से परिस्थितिकी तन्त्र से जुड़ा रहकर जीवन की सार्थकता और निरन्तरता को अक्षुण्ण रखें और शनैः- शनैः उच्च से उच्चतर अवस्था प्राप्त करें।

पर्यावरण और परिस्थितिकी का क्षेत्र विस्तृत है उसे संकुचित सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता है। मनुष्य के जीवन और वनस्पति के जीवन के बीच सीमा रेखा नहीं खीची जा सकती क्योंकि दोनो एक दूसरे के पूरक हैं। वनस्पति ही क्यूं, पशु, पक्षी, कीड़े मकौड़े, नदी आदि सब मिलकर सृष्टि में एक समवाय पैदा करते हैं जिसके बिना दृष्टि अधूरी हो जाती हैं पेड़ पौधे तो मानव जीवन के अपरिहार्य ही हैं क्योंकि मानव जीवन के लिए सर्वाधिक आवश्यक तत्व आक्सीजन पेड़ पौधों से प्राप्त होती है। यहीं नहीं पेड़ों की कमी से आक्सीजन में कमी आ जाती है जिसके कारण लोगो को तरह तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए भगवान बुद्ध ने सदैव पेड़-पौधों से अभिन्नता रखी है कितनी विचित्रता है कि उन्होंने पुष्पित पादपों और पक्षियों के कलरव के मध्य जन्म लिया। वृक्ष के नीचे बोधि वृक्ष ज्ञान प्राप्त किया, सारनाथ के जंगल श्रृषिपतन मृगदाव में प्रथम उपदेश दिया और कुशीनगर के सघन वन सालवन में शरीर त्याग महापरिनिर्वाण प्राप्त किया। कदाचित विश्व में ऐसा कोई भी महापुरुष नहीं हुआ जिसने अपना सम्पूर्ण जीवन प्रकृति के मध्य ही बिताया।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. बौद्ध साहित्य में पर्यावरण - डॉ0 अजय कुमार पाण्डेय-पृष्ठ संख्या-38,39, 63, 253
2. कृषि, वन वृक्ष पर्यावरण और बौद्ध धम्म - डॉ0 बनवारी लाल समुन, डा0 मन्जू सुमन -पृष्ठ 13,17,28
3. बौद्ध पर्यावरण एवं सामाजिक जीवन - डॉ0 राहुल राज - पृष्ठ 26,37,38
4. संस्कृति एवं पर्यावरण - पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली
5. बौद्ध कालीन संस्कृति - डा0 शशिकान्त सिंह पृष्ठ संख्या - 21,22,23

Scanned with OKEN Scanner